International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-02-2023, Accepted: 12-03-2023, Published: 27-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 20-22

पारिजात उपन्यास में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श

संतोष देवी
पी.एच.डी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर, भारत

सारांश
उपन्यास में स्त्रियों के विभिन्न रूपों की चर्चा की गई है जिनमें कुछ स्त्रियाँ ऐसी हैं जो दूसरों के सहारे नहीं जीती अपितु आत्मनिर्भर हैं। रूही आत्मनिर्भर स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। वह पढ़ी–लिखी स्त्री है। वह जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आने के बावजूद भी अपने जीवन को सँभालती है तथा समाज–कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है। समाज में स्त्री तभी तक सुरक्षित है जब तक वह किसी पुरुश अर्थात् पिता, पुत्र, भाई की छत्रछाया में हो, किन्तु जैसे ही उसके सर से पुरुष का साया हटता है तो उसके सगे–संबंधी भी मौके का फायदा उठाने से पीछे नहीं हटते। इसका वर्णन लेखिका ने जुलिफकार और नुसरतजहाँ की छमाही फातिहे में आई हुई युवती के माध्यम से किया है जिसके विधवा होते ही जेठ और ससुर परेशान करते हैं। लेखिका ने केवल विधवा नारी की समस्या को ही नहीं दर्शाया अपितु रोहन और रूही के विवाह के माध्यम से विधवा के पूर्ण विवाह का समर्थन भी किया है।

मूल शब्दः विधवा विवाह, लिंग भेद, अनमेल विवाह, नारी सशक्तिकरण

समकालीन हिन्दी साहित्य जगत में नासिरा शर्मा को एक प्रगतिशील लेखिका के रूप में ख्याति प्राप्त है। 'पारिजात' उपन्यास का प्रकाशन वर्श 2011 है जिसके लिए इन्हें 2016 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। इस कथा में रोहन, रूही, प्रह्लाद दत्त, फिरदौस जहाँ, निखिल, शोभा, ऐलेसन आदि मुख्य तथा गौण पात्रों के रूप में प्रकट हुए हैं। समाज में नारी की प्रतिश्ठा पुरुश पर आधारित है। जब तक पति जीवित है तभी तक उसे सुख–सुविधाएं तथा मान–सम्मान प्राप्त होता है। पति का देहान्त होते ही सब मान–सम्मान भी समाप्त हो जाता है। उपन्यास में सरस्वती ऐसी विधवा के रूप में सामने आई है जिसकी दौलत–शौहरत पति की मृत्यु के उपरान्त समाप्त हो जाती है। सरस्वती की व्यथा व्यक्त करते हुए फिरदौस जहाँ कहती है–

''सरस्वती भी कौन–सी सुखी है। जब से पति का देहांत हुआ है कोई न कोई रोग लगा रहता है।... जब मिश्रा जी सिविल सर्विस में थे तो शान ही कुछ और थी। नौकरी–चाकर, दोस्त–अहबाब, ताँता बँधा रहता था।''[1]

समाज में हमें आज ऐसा वर्ग देखने को मिलता है जो विधवा विवाह को सहमति दे रहा है। उपन्यास में नुसरतजहाँ के माध्यम से विधवा के प्रति बदलता दृश्टिकोण सामने आता है। वह अन्ना बुआ से कहती है–

''अन्ना! अभी तुम जवान हो, हमारी ख़्वाहिश है कि तुम अपना घर बसा लो। तुम्हारी नज़र में कोई है तो बोलो, वरना हम अच्छा आदमी और माकूल घर देख तुम्हारा निकाह पढ़वा देंगे।''[2]

उपन्यास में विधवा जीवन का निर्वाहन करते हुए फिरदौस जहाँ का चरित्र उभरता है। उनके पास धन–दौलत आदि का कोई अभाव नहीं है परन्तु वह एकाकी जीवन व्यतीत करने के लिए विवश है। क्योंकि व्यक्ति की धन दौलत उसका परिवार होता है। फिरदौस जहाँ को परिवार का सुख ही नहीं मिलता है। पति की मृत्यु, बेटे का विदेश जाना और बेटी का विवाह के उपरानत विधवा हो जाना, उसे हर तरह से खालीपन देता है। फिरदौस जहाँ के संबंध में लेखिका कहती है कि–

''सारा दिन उनका बिस्तर पर या व्हीलचेयर पर गुजरता है। बहुत हुआ तो वाकर की मदद से थोड़ा–बहुत टहल लीं। उन्हें बेटे–बहू के विलायत में बसने का इतना दुःख न था, जितना रूही की जिन्दगी के इस तरह बिखरने का था। जवान औरत के पास साथी न हो तो फिर धन दौलत का अबार और शोहरत–इज्ज़त किस काम की?''[3]

नुसरत जहाँ और जुल्फिकार अली के छमाही फातिहे में आई हुई औरतों में एक विधवा युवती जब रोते–रोते बेहोश हो जाती है तब पता चलता है कि उसके जेठ और ससुर ने उसे परेशान करके रखा है। अन्य युवतियाँ उसके बारे में बात करते हुए कहती हैं कि–

''पिछले माह बेवा हुई है... बेचारी।... सुना है... अब क्या कहें... जेठ–ससुर ने परेशान कर रखा है।''[4]

आज भी समाज में स्त्री तभी तक सुरक्षित है जब तक वह किसी पुरुश अर्थात पिता, पुत्र, भाई की छत्रछाया में हो, किन्तु जैसे ही उसके सर से पुरुश की छाया हटती है तो हर व्यक्ति उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता है चाहे वह उसका अपना सगा सम्बन्धी ही क्यों न हो।

आज 21वीं सदी के दौर में भी पुरुशों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम है। इसका कारण है कि आज भी लोग लड़का और लड़की के बीच भेदभाव करते हैं, तथा माँ बाप अपनी औलाद के रूप में लड़के को ही प्राथमिकता देते हैं जिसके कारण भ्रूण हत्या जैसी अनेक समस्याएं देश में उत्पन्न हो गई हैं। ऐसा ही एक उदाहरण लेखिका ने गर्भवती फातमा के माध्यम से व्यक्त किया है। जिसे ससुराल वालों ने मायके यह कहकर छोड़ दिया है कि यदि लड़का पैदा होगा तभी वापिस ले जाएँगे और यदि लड़की पैदा हुई तो उसे पूरा जीवन मायके में ही व्यतीत करना पड़ेगा–

''हालत जब लौंडिया की ख़राब हुई तो ससुराल वाले मायके छोड़ गए। लड़की हुई तो वापस नहीं ले जाएँगे और जो लड़का हुआ तो सब बदल जाएगा। यही लौंडिया सर–आँखों पर दादी के पोते को लेकर ससुराल बुलाई जाएगी।''[5]

आज भी हम ऐसी रूढ़िवादी मानसिकता के खिलाफ आवाज़ उठाने के बजाये उन्हें सहकर जाने–अनजाने में बढ़ावा देते हैं। लेखिका औरतों पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित करते हुए कहती है–

''हम औरतें आज भी अपने चारों तरफ ढाए जुल्म और गुनाह के ख़िलाफ आवाज़ बुलंद करती हैं क्योंकि मर्दों से ज्यादा औरतों का यह फर्ज़ है कि वह अपनी आँखें खुली रखें, क्योंकि उनके कंधों पर सिर्फ मर्दों के साथ चलने की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि नई पीढ़ि को अच्छे और ईमानदार शहरी बनाने की जिम्मेदारी भी है।''[6]

उपन्यास में रूही और मोनिस बशारत हुसैन और फिरदौस जहाँ के पुत्री और पुत्र हैं। जन्मोपरान्त जो अधिकार मोनिस को दिए जाते हैं वह सब रूही को भी प्राप्त हैं। परन्तु रूही अपने भाई का कर्तव्य भी स्वयं निभाती है। वह अपने और माँ के घर की जिम्मेदारियां बखूबी निभाती है। फिरदौस जहाँ रूही के संबंध में कहती है कि– ''यही लड़कियाँ भी माँ के लिए अमृत होती हैं... आबेहयात की बूँद।''[7]

इस उपन्यास में मात्र लिंग भेद को ही चित्रित नहीं किया गया बल्कि लिंग भेद के प्रति समाज के बदलते दृश्टिकोण को भी रूही के माध्यम से व्यक्त किया है।

शिक्षा पर केवल पुरुशों का जन्म सिद्ध अधिकार माना जाता था अब स्त्री शिक्षा पर भी बल दिया जाता है। समाज के उत्थान के लिए जरूरी है कि समाज की आधी आबादी (स्त्री) को शिक्षित किया जाए। इसके लिए भारत सरकार द्वारा भी अनेक योजनाएँ बनाई गई हैं जिसमें स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया है जैसे– बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। भारत में सर्वप्रथम सावित्री बाई फुले ने स्त्री शिक्षा के लिए स्कूल खोला था। उपन्यास में भी लेखिका ने काज़िम की दादी के माध्यम से स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया है। काज़िम की दादी लड़कियों के लिए स्कूल खोलती है। उनके मरने के बाद उनका बेटा उसे हाई स्कूल और फिर कॉलेज में बदल देता है। स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने में न केवल स्त्री ने बल्कि पुरुशों ने भी बराबर की भूमिका निभाई है–

''दादी ने कभी लड़कियों का एक स्कूल घर के दालान में खोला था। उनके मरने के बाद लंबे–चौड़े घर का आधा हिस्सा जुल्फिकार अली ने माँ के नाम से अमीना गर्ल्स हाई स्कूल में बदल दिया था, जो दसवीं क्लास से बढ़कर बी.ए. तक पहुँच गया था और अब कॉलेज कहलाता था।''[8]

वर्तमान में लोग समाज सेवा के नाम पर व्यापार करने लगे हैं किन्तु कुछ लोग उपन्यास की पात्र रूही जैसे भी है जो अपना सर्वस्व समाज पर न्यौछावर करना चाहते हैं। जिनके लिए समाज का कल्याण करना ही प्रमुख उद्देश्य है।

इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने स्त्री का पक्ष निश्पक्षता के साथ रखा है। उन्होंने स्त्री के सबला रूप के साथ–साथ अबला रूप को भी दर्शाया है। एक स्त्री वह है जो अपने अधिकारों के प्रति सचेत है और अपने अधिकारों के लिए लड़ रही है वहीं दूसरी ओर एक स्त्री ऐसी भी है जो आज भी पितृसत्तात्मक समाज के कारण शोशण सह रही है और एक वह स्त्री भी है जो उसके लिए बनाए गए कानूनों का दुरुपयोग कर रही है। वर्तमान समय में केवल आयु में समानता न होना ही अनमेल का बोध नहीं करवाता बल्कि मूल रूप से विचार एवं रूचियों में भिन्नता ही अनमेल है। उपन्यास में ऐलेसन और रोहन प्रेम विवाह करते हैं। यह विवाह केवल दो मनुश्यों का नहीं अपितु भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के मेल को दर्शाता है। आठ साल आपस में वह प्रेम के साथ रहते हैं इस बीच उनका बेटा पारिजात भी पैदा होता है। किन्तु उसके जन्म के उपरान्त ही उनमें विवाद उत्पन्न होने लगते हैं। जिस कारण ऐलेसन रोहन पर अनेक इलज़ाम लगाती है–

''पाँच दिन बाद ऐसा कोई इलज़ाम न था, जो रोहन पर लगा न था। ड्रिंक, कॉलर्गल, शराब पीकर ड्राइविंग, मार डालने की धमकी, पसली हँसली और कलाई की हड्डियाँ तोड़ने और पत्नी को अपाहिज बना देने की हालत, साथ में डॉक्टरी रिपोर्ट।''[9]

आठ साल के बाद भी रोहन और ऐलेसन का रिश्ता टूट जाता है क्योंकि ऐलेसन रोहन को अपनी इच्छानुसार चलाना चाहती है। रोहन घर को बचाए रखने के लिए प्रयत्न करता है लेकिन वह कामयाब नहीं होता। ऐलेसन की खुदगर्जी को व्यक्त करते हुए रोहन कहता है–

''ऐलेसन मुझे पालतू बनाना चाहती थी। इस हद तक मेरा अपना कोई वजूद बाकी न रह पाए। एक आदमी घर बनाए रखने के लिए किस हद तक समझौता कर सकता है, आखिर किस हद तक...?''[10]

रोहन और ऐलेसन का विवाह टूटने का कारण उनके विचारों में विभिन्नता तथा भिन्न संस्कृति का होना है। रोहन की माता को इस बात का आभास था कि यह शादी सफल नहीं हो सकती परन्तु फिर भी वह अपने बेटे की इच्छा के अनुसार उसका विवाह करवाती है–

''दोनों की तबीयत में बहुत फर्क है। एक अंदर यात्रा करता है, दूसरा बाहर। दो कल्चर का यह गठबंधन जाने क्यों मुझे शंकित करता है।''[11]

लेखिका ने स्पश्ट किया है कि अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न होने वाले तनाव की शिकार केवल स्त्रियाँ ही नहीं होती अपितु पुरुश भी बराबर स्तर पर तनावग्रस्त होते हैं। वैचारिक मतभेद दाम्पत्य सम्बन्धों में दुख का कारण बनते हैं। उपन्यास में रोहन का तनाव उसके द्वारा कहे शब्दों से व्यक्त होता है–

''उसी ने मुझे मजबूर किया था मिडिल ईस्ट जाने की ओर वही मुझे तन्हा छोड़कर वापस चली गई। कोई डायलॉग होता, कोई वजह होती, हम अकेले नहीं थे, जो अलग होने में आसानी होती। हमारा एक बच्चा था। उसे तो उसने बदकिस्मत बना दिया ठीक अपनी तरह। उस बेटे को तो माँ बाप और घर चाहिए। उसका फैसला तो शामिल नहीं है। सच पूछो तो ऐलेसन ने यह एकतरफा फैसला हम दोनों पर लादा है।''[12]

इण्टरनेट के माध्यम से आज हम एक–दूसरे के परिवेश से परिचित हो रहे हैं और प्रेम की नई कोपलें भी खूब पनप रही हैं लेकिन यह आभासी प्रेम व्यवहारिक रूप लेते ही बेरंग होने में भी वक्त नहीं लगाता है और यदि दम्पत्ति अलग–अलग वातावरण से सम्बन्ध रखने वाले हों तो समस्या और बढ़ जाती है तथा कई बार नौबत तलाक तक आ जाती है। लेखिका ने इस जवलन्त समस्या को उपन्यास में चित्रित कर दाम्पत्य संबंधों में अनमेल के कारण को बताते हुए दम्पत्तियों के तनावमयी रूप को भी अभिव्यक्त किया है।

नासिरा शर्मा ने 'पारिजात' उपन्यास में स्त्री के विविध रूप उभारे हैं। इस उपन्यास में रूही मुस्लिम परिवार से सम्बन्ध रखने वाली शिक्षित, जागरूक एवं खुले विचारों वाली लड़की है। वह फोरेन रिर्टन रह चुकी है वह हारवर्ड युनिवर्सिटी से पी.एच.डी. है। रूही अपने बचपन के मित्र काज़िम से प्रेम–विवाह करती है। किन्तु विवाह के कुछ महीनों बाद ही उसके जीवन में दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। एक के बाद एक घर में मृत्यु उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है। रूही के शब्दों में–

''इस घर में बाप का प्यार जो जुल्फिकार अली ने दिया था, वह तो बशारत हुसैन से कहीं ज्यादा था। उसमें बहू का नाज़ भी उठाने का जज़्बा शामिल था। कभी–कभी रूही को लगता कि वह खुशकिस्मत से ज़्यादा बदकिस्मत है जो हर चाहने वाला उससे दूर चला जाता है। काज़िम न जाता तो अम्मी को हार्ट अटैक न होता। अम्मी अचानक न जातीं तो अब्बू को ब्रेन हैमरेज न होता।''[13] किन्तु इन सब कठिनाइयों के होने के पश्चात् भी वह हालातों से टकराना खूब जानती है–

''अपने हालात से समझौता करने के अलावा इनसांन के पास और चारा भी क्या है और इसी में उसकी भलाई भी है।''[14]

रूही उन आधुनिक स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो अनेक कठिनाईयों के बीच न केवल अपनी जिम्मेदारियों को निभाती है बल्कि अपने अस्तित्व की भी रक्षा करती है।

आज के दौर में स्त्री इतनी स्वतन्त्र है कि वह स्वयं के लिए निर्णय ले सकती है। चाहे वह निर्णय शिक्षा संबंधी हो या विवाह संबंधी। बदलते नज़रिये को रूही के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वह अपने दोस्त रोहन से दूसरा विवाह करने का निर्णय लेती और रोहन से कहती है–

रूही उन लड़कियों में से नहीं है जो घर में रहकर अपने हालातों से समझौता करती है अपितु अपने दुःखी जीवन को वह समाज

कल्याण के लिए अर्पित कर देती है। उसमें यह भावना प्रबल है। लेखिका समाज कल्याण का सही अर्थ रूही द्वारा सिद्ध करती है। रूही अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर गाँव के कल्याण के लिए सोचती है।

रूही पूरे गाँव का दौरा करने के बाद निर्णय लेती है कि जितनी आमदनी ट्रस्ट को दी जाती है उसका लाभ लोभी व्यक्ति ही उठाते हें, अनाथालय को कुछ नहीं मिलता। उनकी स्थिति में सुधार करने का निर्णय लेते हुए वह कहती है–

''यतीमखाने का बुरा हाल है, पता नहीं सालाना हमदाद का रुपया जाता कहाँ है। मुझे तो लगता है कि पैसा में तभी ट्रस्ट में दूँगी, जब उनकी रिपोर्ट और उनका काम देख लूँगी। मुझे ही यह ज़िम्मेदारी निभानी पड़ेगी, वरना जिसकी ड्यूटी लगाऊँगी वह भी कमीशन ले, इन लावारिस बच्चों के हक का हिस्सा बँटा लेगा।''[15]

स्त्री को पारिवारिक दायित्व सौंपा जाता है परन्तु आज नारी घर से बाहर निकल कर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी जगह बना रही है अर्थात् नारी का सशक्त रूप देखने को मिल रहा है। लेखिका ने रूही को सचेत तथा जागरूक नारी के रूप में चित्रित किया है। उपन्यास में प्रभा भी हमारे समक्ष एक सशक्त स्त्री के रूप में उभरकर आती है। वह प्रह्लाद की पत्नी तथा रोहन की माँ होने के साथ–साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग भी प्राध्यापक भी है–

''प्रह्लाद दत्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़े ही नहीं थे, बल्कि अर्थशास्त्र विभाग के एक लायक प्रोफेसर भी रह चुके थे। उनकी पत्नी प्रभा दत्त भी उसी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में अध्यापन कर रही थीं।''[16]

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि परिजात उपन्यास में न केवल नारी की समस्याओं का चित्रण हुआ है बल्कि उस के भीतर जागृत हो रही चेतना का भी चित्रण देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 134
2. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 125
3. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 132
4. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 121
5. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 48
6. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 121
7. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 486
8. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 166
9. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 299
10. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 244
11. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 30
12. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 129
13. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 108
14. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 246
15. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 259
16. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृ. 32